# अमरीका के साहसिक कारनामे

## आज़ादी के लिए उठी आवाज़ें

- अमरीका में गुलामी
- भूमिगत रेलमार्ग
- 1963 का आज़ादी जुलूस

# अमरीका के साहसिक कारनामे

## आज़ादी के लिए उठी आवाज़ें

- अमरीका में ग़ुलामी
- भूमिगत रेलमार्ग
- 1963 का आज़ादी जुलूस

# अनुक्रम

# सुनने वाले

## - अमरीका में गुलामी

लेखनः ग्लोरिया व्हेलन

चित्रः माइक बैनी

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

सुबह जब बॉस (गुलामों का निरीक्षक) बिगुल बजाता है, तब घुप्प अंधेरा होता है। हम झटपट बिस्तर छोड़ते हैं।

मेरे दोस्त बॉबी और सू, मेरी तरह कपास चुन पाने के लिए बहुत छोटे हैं। सो बॉबी गायों को चरागाह में ले जाता है।

और सू, वह नन्हे बच्चों की देखभाल करने में नानियों-दादियों की मदद करती है।

हम थके-मांदे घर लौटते हैं। पर बॉबी, सू और मैं, एला मे, को रात के खाने के बाद भी कुछ करना पड़ता है।

हमें सुनना पड़ता है।

पेट में मीठी शकरकंदियाँ और होठों पर गुड़ की मिठास लिए हम चल देते हैं। बड़े घर में रहने वाले मालिक और मालकिन गुलामों को कुछ नहीं बताते। सो हम उनकी बातचीत सुनते हैं और ताज़ा ख़बर अपने माँ-बाप को सुनाते हैं।

जुगनू जल-बुझ रहे हैं। बॉबी, सू और मैं, एला मे, बड़े घर की खिड़कियों के पास की झाड़ियों के बीच झुक कर छिप जाते हैं। सुनना हम बच्चों का काम है। हम खुद को कपास के बीजों-सा छोटा बना लेते हैं। और छाया जितना चुप्पा।

हवा परदों को खुली खिड़कियों के बाहर धकेलती है। रेत-मक्खियाँ हमें काटती हैं और मच्छर सूईयाँ चुभाते हैं, पर हम उन्हें चपत लगा मारते नहीं। हम सुनने जो आए हैं।
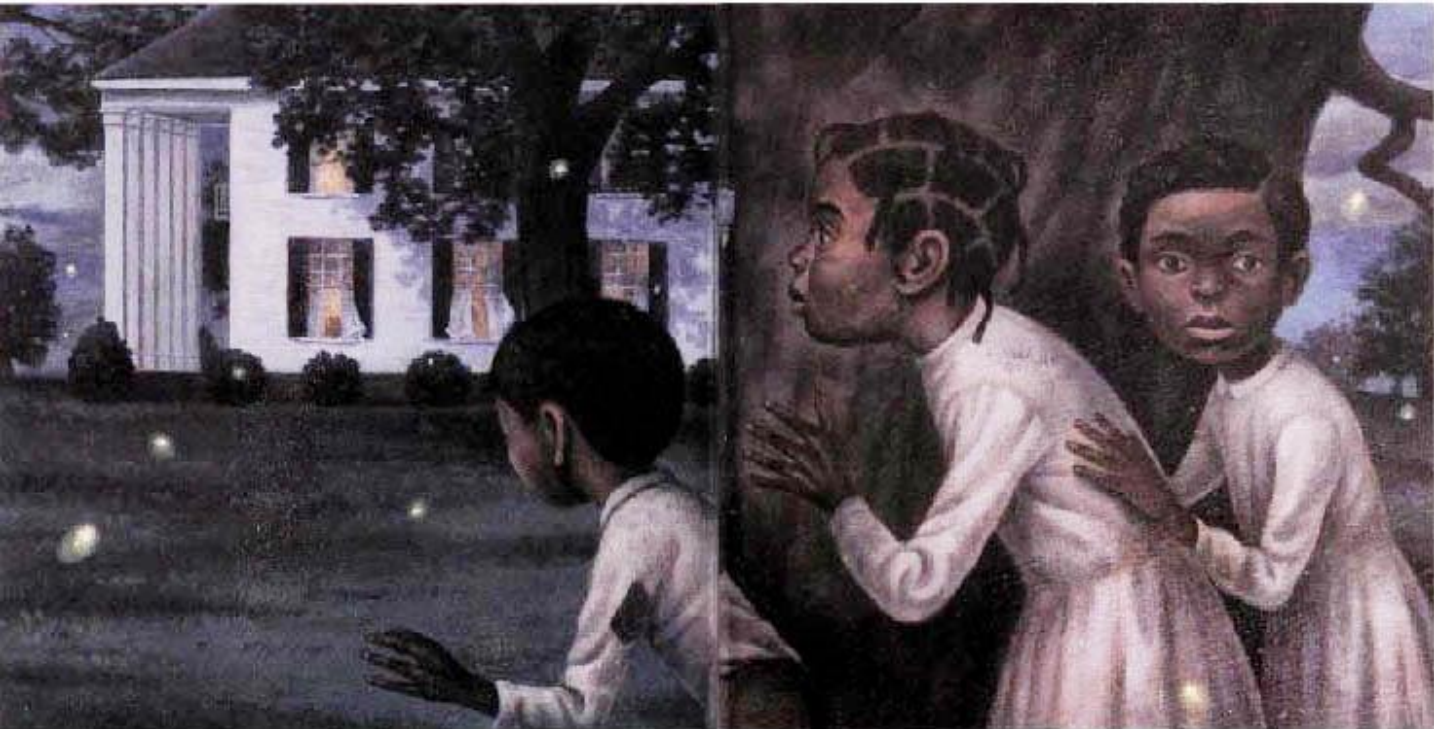
मालिक थॉमस और मालकिन लूइस, और उनके बच्चे, छोटे मालिक जॉन और छोटी मालकिन ग्रेस, शाम का मज़ा ले रहे हैं। छोटी मालकिन ग्रेस पियानो बजा रही है। संगीत हमसे बोलता है, पर उसे एक भी शब्द कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती। हम एक-दूसरे के हाथ थाम लेते हैं। इस डर से कि संगीत हमें उड़ा ही न ले जाए।

मालिक मालकिन को बताते हैं कि हम ग़ुलामों को एक नया बॉस मिलने वाला है, जो हमारी निगरानी करेगा। मेरे चेहरे पर एक मुस्कान फैल जाती है। मुझे पुराने बॉस से नफ़रत है। अगर तुम तेज़ी से कपास न चुनो तो वह फट्ट से अपनी ख़तरनाक बेंत जड़ देता है।

बॉबी, सू, और मैं, एला मे, ख़बर सुनाने लोमड़ियों की सी रफ्तार से घर भागते हैं।

हमारी मैमियाँ तालियाँ बजा कर नाचने लगती हैं। पर मेरे डैडी कहते है।, “मैं जब तक नए आदमी को देख लूँ तालियाँ नहीं बजाऊंगा।”

सूरज और मैं अपना काम एक साथ ही शुरू करते हैं। मैं मैमी और डैडी के साथ कपास जो चुनती हूँ।
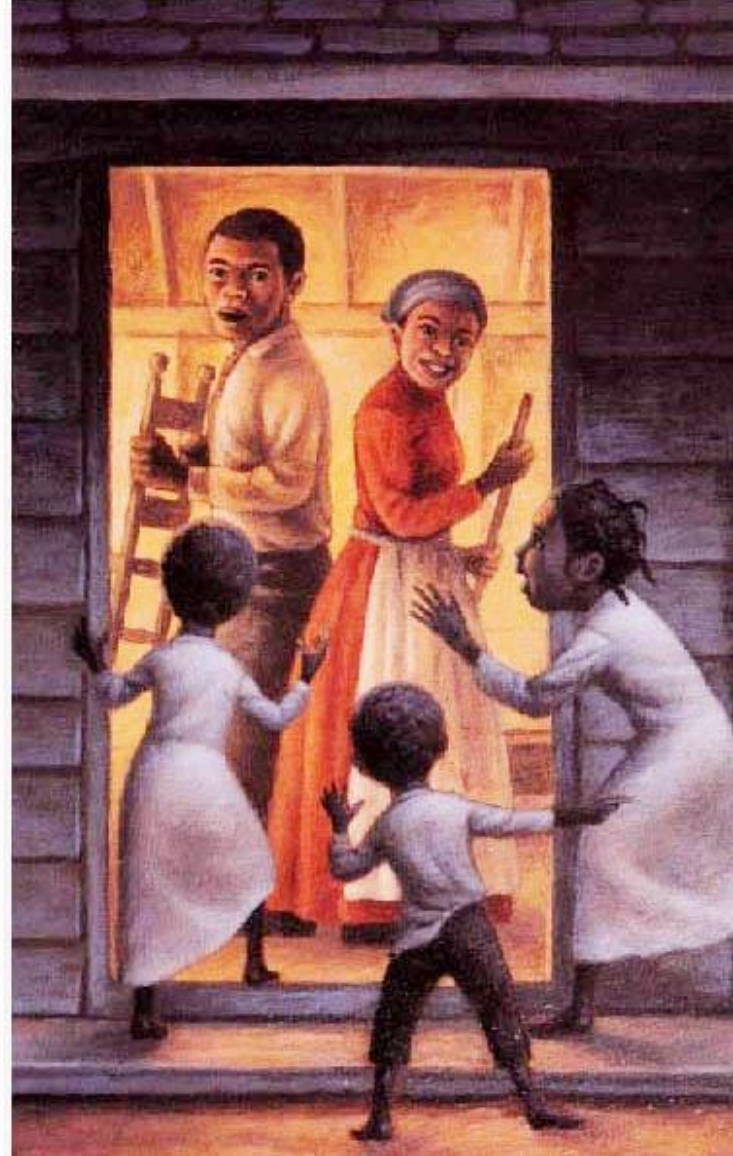
कपास के पौधों के छोटे कांटे मेरी उंगलियों को भेदते हैं। हम सुबह की ठंडक में जोश से काम करते हैं। एक बार तो डैडी ने एक ही दिन में चार सौ पाउंड कपास चुनी थी। कोई भी मेरे डैडी से तेज़ कपास नहीं उतार सकता।

दोपहर हो गई है और खाने का समय है। हम बच्चों के लिए एक लकड़ी की बाल्टी होती है, और चम्मचों के नाम पर सीपियों के खोल।

आज खाने में नमकीन सूअर का माँस और मक्की की डम्पलिंग के साथ लोबिया का घोटा है, लोबिया की आँखें हमें देखती लगती हैं। हम तब तक खाते हैं, जब तक हमारे पेट फूल कर पौसम चूहों जितने फूल नहीं जाते।

दोपहर की धूप मुझे पिघला रही है, सो मैं खास चुन नहीं पाती। डैडी यह देख मेरी लगभग खाली टोकरी मे अपनी चुनी कुछ कपास डाल देते हैं। वे नहीं चाहते कि बॉस अपनी ख़तरनाक बेंत मुझ पर फटकारे।
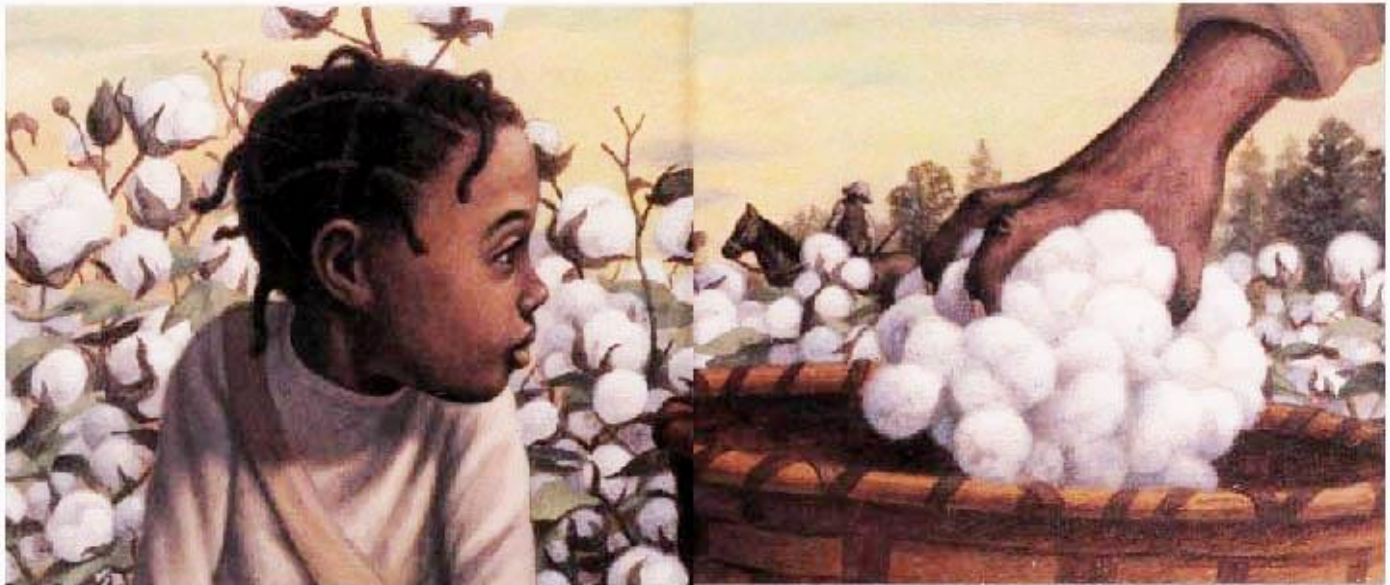
उस रात हमने बड़े घर के मालिक थॉमस को कहते सुना, "मुझे स्पैन्सर से विलियम को ख़रीदने का प्रस्ताव मिला है। उनके पास आदमी कम हैं।"

विलियम! वे तो मेरे डैडी हैं। मेरा दिल घबराई हुई चिड़िया-सा फड़फड़ाने लगता है। पर मैं आगे सुनती हूँ।

"मुझे नहीं लगता कि मैं उसे जाने दे सकता हूँ," मालिक कहते हैं। "वह हमारा सबसे अच्छा चुनने वाला है। और वह मशीनों को भी समझता है। सोच रहा हूँ कि मैं उसे यह भी सिखा दूँ कि कपास ओटने वाली मशीन का रख-रखाव कैसे किया जाता है।"

मैं अपनी साँस छोड़ती हूँ और अपनी बाँहें सू के गिर्द डाल देती हूँ। उसके पिता को पिछले साल बेच दिया गया था। तब से उसने अपने डैडी को देखा ही नहीं है।

घर पहुँच मैं अपने डैडी को गले लगाती हूँ और तब खुशखबरी देती हूँ।
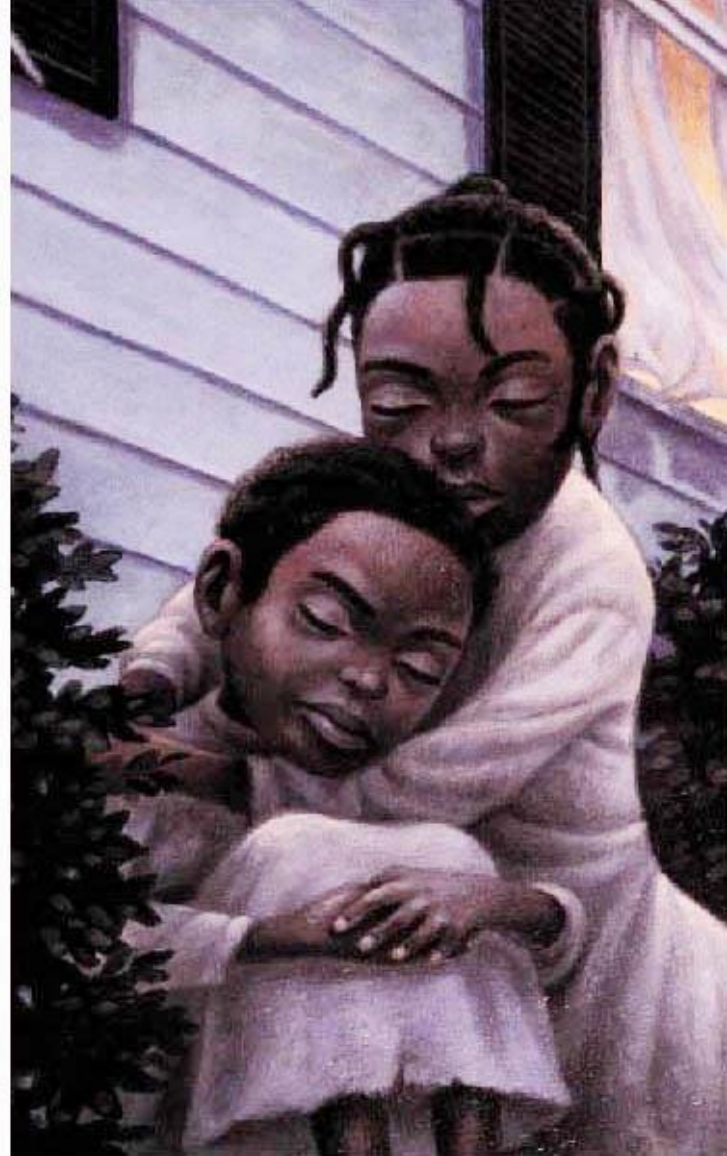
शनिवार की रात है। मैमी हमारे कपड़े धोती है और हमें नहलाते वक़्त इतना रगड़ती है कि चमड़ी ही उधड़ जाए। ताकि हम गिरजे के लिए चमकदार साफ़ हो जाएं।

हम ऊपर बालकनी में बैठते हैं। गिरजे में गोरे हमसे नीचे बैठते हैं। जब हम 'अमेंज़िग ग्रेस' गाते हैं, तब गोरे और उनके गुलाम साथ-साथ गाते हैं। दोपहर को हम जंगल जाते हैं। हमारे गिरजे की छत नीला आसमान है और फ़र्श के नाम पर है हरी घास।

हमारे अपने पादरी हैं। वे मोसेस की कहानी सुनाते हैं, जिसने इस्रायल के लोगों को आज़ादी दी थी। ''खुदा हमें भी आज़ाद करेगा,'' वे वादा करते हैं। ''जुबली (नागरिक युद्ध के बाद कालों की मुक्ति का समय) आने ही वाली है।''

हमने तब प्रार्थनाएं गाईं - 'खुदा के सभी बच्चों के हैं पंख' और 'स्थिर रहना जॉर्डन' हम गोरों से कहीं ज़ोर से गाते हैं, ताकि खुदा हमें सुन सके। मैं उम्मीद करती हूँ कि वह सुन रहा होगा।

हम बॉस को बड़े मालिक से कहते सुनते हैं कि अगर कुदाली के बदले हल और कुछ घोड़े ख़रीद लिए जाएं तो काम फुर्ती से हो सकेगा। हमें बात ठीक लगती है, क्योंकि कुदाली से खेत जोतना मुश्किल काम है।

पर मालिक कहते हैं कि वे कोइ हल-वल नहीं ख़रीदने वाले। ''ग़ुलाम'', वे कहते हैं, ''घोड़ों से सस्ते पड़ते हैं।''

आज रात बड़े घर में हरेक मोमबत्ती जल रही है। लगता है बैठक के अन्दर सूरज टाँग दिया गया हो। वायलिन बजाने वाले संगीत को खिड़की के बाहर फेंक रहे हैं।

बॉबी, सू, और मैं, एला मे, घास पर नाचते हैं, जब तक हमारे पैर ओस से गीले नहीं हो जाते और बेंत के डर से कमज़ोर पड़ा हमारा दिल यह नहीं कहता कि घर लौटने का समय हो गया है।
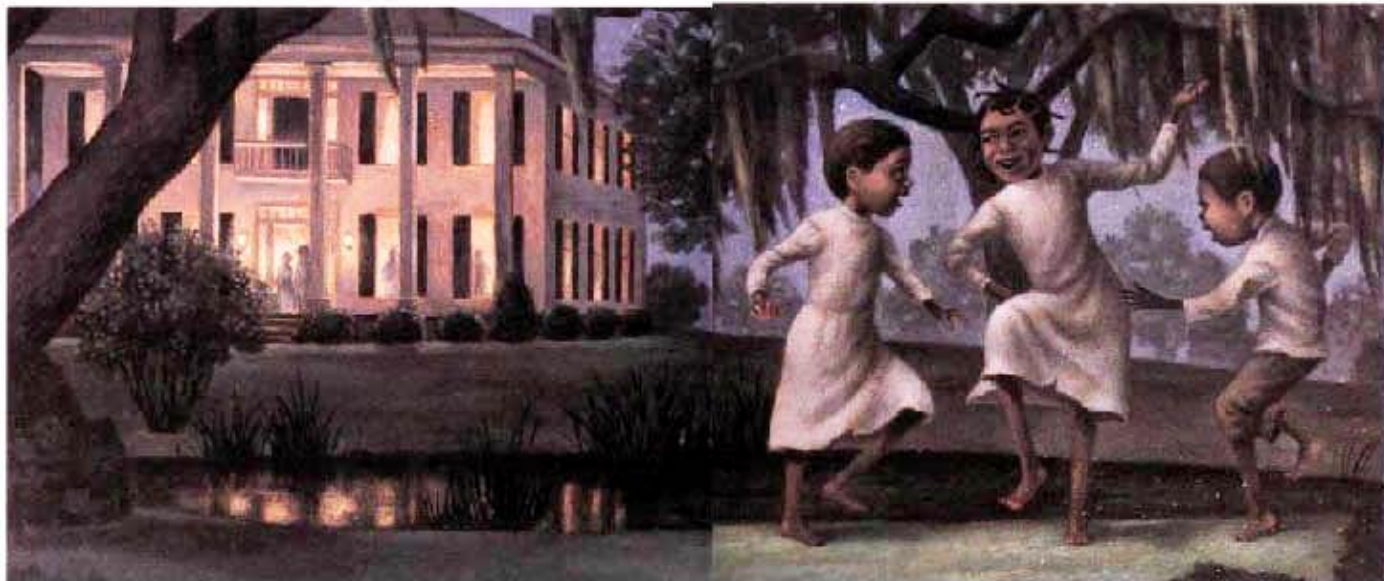
रहम है ख़ुदा का! आख़िरकार सारी कपास चुन ली गई है।

आज में कुदकिया बन डैडी की मदद करती हूँ कपास से भरा एक बड़ा बोरा लटकाया जाता है और हम उसमें घुस जाते हैं। तब हम कपास पर कूदने लगते हैं। मैं कपास पर टर्की ट्रॉट और मेरी जेन नाचती हूँ। शुरुआत में कपास मेरे पैर की उंगलियों को मुलायम लगती है। पर जब तक हम कूदना बन्द करते हैं बोरे की कपास दब कर सख़्त हो चुकी होती है।

उसी रात जब हम सुनने जाते हैं मालकिन लूईस मालिक थॉमस से पूछती हैं, "मैं गुलाम बच्चों के लिए एक स्कूल क्यों न शुरू करूं?"

मालिक कहते हैं, "क्या सोच रही हो प्यारी? गुलामों को पढ़ाना-लिखाना ग़ैर-कानूनी है।"

जो महिला छोटी मालकिन ग्रेस को पढ़ाने आती हैं, उन्होंने छोटी मालकिन को याद करने को एक कविता दी है। छोटी मालकिन उसे बार-बार दोहरा कर अपनी ममा को सुनाती हैं:

*बनाऊंगी मैं तुम्हारे लिए गुलाबों का बिछौना,*
*और हज़ार खुशबूदार गुलदस्ते,*
*फूलों का ताज और एक लहंगा,*
*हिना के पत्तों से कढ़ा हुआ।*

मैं गुलाबों को जानती हूँ, हिना के झाड़ों को भी। पर मैं लहंगा नहीं जानती, बॉबी और सू भी नहीं जानते। मैं घर के रास्ते कविता को दोहराती जाती हूँ। अब वह मेरी कविता भी है।

जब मैं सोने जाती हूँ मैं कल्पना करती हूँ कि मेरा फूस से बना गूदड़ा गुलाबों का बिछौना है।

ठंड का मौसम आने वाला है, सो आज गरम कपड़े पकड़ाए जाते हैं। बॉबी को एक कमीज़ मिली है और सू और मुझे फलालेन की फ्राकें और चड्डियाँ। पर नए जूते नहीं। मेरे पैर की उुगलियाँ कतई खुश नहीं हैं।

मास्टर थॅमस को उनकी वर्दी में देखा गया है, पीतल के बटनों और तलवार समेत।

डैडी ने मुझे कहा, "एला मे, तुम्हें बॉबी और सू को आज रात बड़े ध्यान से सुनना होगा। लगता है ख़तरनाक समय आने ही वाला है।

क्योंकि हो सकता है कि तुम बच्चे आज जो सुनो, उस पर हम सबकी जान निर्भर करे।"

मालिक थॉमस नाराज़ हैं। उनके अल्फाज़ झुनझुन साँप (रैटल स्नेक) से ज़हर बुझे निकलते हैं। "विश्वास ही नहीं होता कि अब्राहम लिंकन को राष्ट्रपति चुन लिया गया है!" मालिक कहते हैं। "वह सिरफिरा है! वह कहता है ग़ुलामी ग़लत है! ग़ुलामी खत्म करनी चाहिए!"

बॉबी, सू और मैं, एला मे, फरवट घर की ओर दौड़ते हैं।

हमारे माँ-बाप हमारे गिर्द इकट्‌ठा होते हैं। हम उन्हें बताते हैं, ''हमें नया राष्ट्रपति मिला है, अब्राहम लिंकन।''

डैडी कहते हैं, ''मोसेस आ रहा है। हम भी इस्रायल के बच्चों की तरह आज़ाद होंगे। जुबली का समय आ रहा है!''

मैं डैडी से पूछती हूँ, ''क्या अब हमारा सुनना खत्म हुआ?''

डैडी कहते हैं, ''हमें रास्ता दिख तो रहा है, पर यह नहीं कि वह कहाँ ख़त्म होगा। हमें जानना होगा कि वह कितना लम्बा है और हम उसे कैसे पार करें। बॉबी, सू और तुम्हारा सुनने का काम तो अब शुरू हुआ है।''

## लेखिका की कलम से

## ग्लोरिया व्हेलन

गुलामों की ज़िन्दगियाँ ऐसी परिस्थितियों पर निर्भर थीं, जो उनके बस के बाहर थीं। वे किसके लिए काम करेंगे या कहाँ रहेंगे, इस बारे में उनकी एक न चलती थी। उन्हें पता नहीं होता था कि कब उन्हें अपने बच्चों या पतियों या पत्नियों से जुदा कर दिया जाएगा। अपनी किस्मत के बारे में कुछ जानने की उम्मीद से वे छोटे बच्चों को अपने मालिकों के घरों की खिड़कियों के पास छुप कर सुनने भेजते थे।

लेखक भी श्रोता होते हैं, इसी तरह तो उन्हें अपनी कहानियाँ मिलतीं हैं। ये कहानियाँ लेखक कभी उन लोगों से सुनते हैं जिन्होंने उसे जिया हो। तो कभी वे ऐसे शब्द सुनते हैं, जो बहुत पहले कहे गए थे और किताबों में दर्ज कर दिए गए थे। यही तो लेखक करते हैं; वे भी बॉबी, सू और एला मे की तरह सुनते हैं और उन कहानियों को दूसरों को थमा देते हैं।
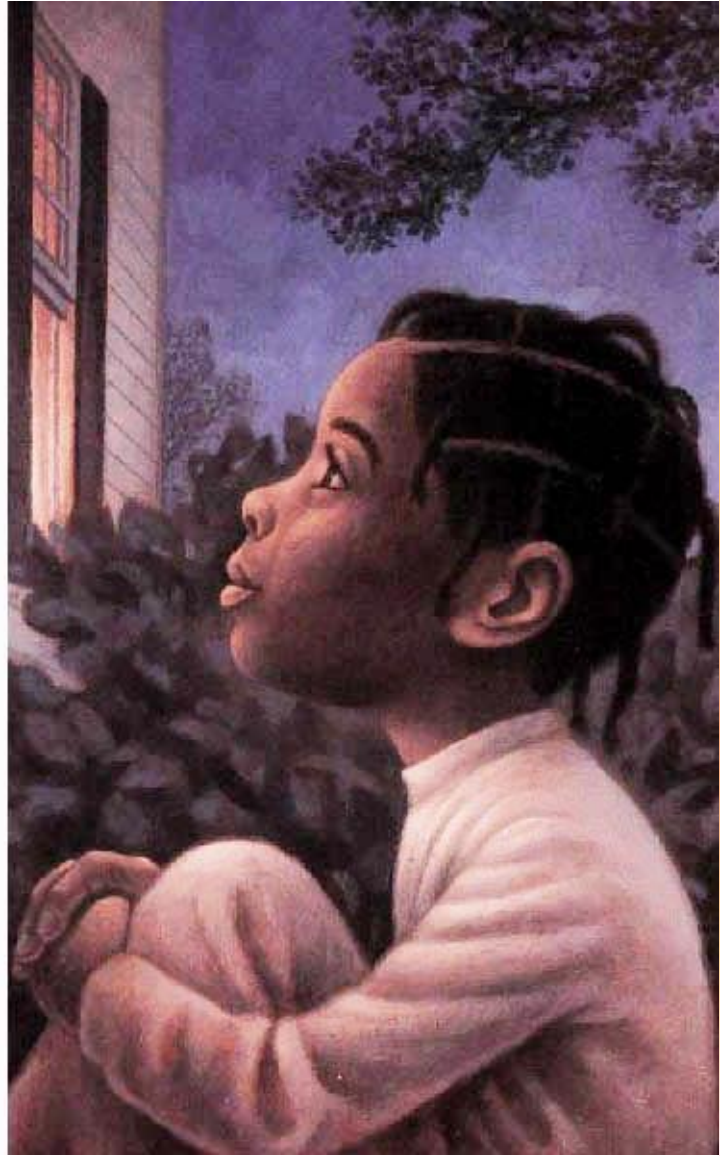
# फ्रीडम नदी का दोस्त

## - भूमिगत रेलमार्ग

लेखन: ग्लोरिया व्हेलन

चित्र: हाइसबर्ट फॉन फ्रैंकनहायज़न

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

लूई ने आख़िरी जंगली मुर्गाबी को पानी से उठ उड़ते देखा। जल्द ही डेट्रॉइट नदी को बर्फ़ ढक देने वाली थी। उसने मछली पकड़ने वाली नाव को किनारे पर उल्टा किया, ताकि उसे बर्फ़ से बचाया जा सके। यही तो उसके पिता हमेशा किया करते थे। उसके पिता सर्दियों के लिए उत्तर में एक लकड़हारों के शिविर में काम करने चले गए थे।

जाने से पहले उन्होंने लूई से कहा था, "बेटा, तुम खेत संभालोगे। अगर तुम्हें यह समझ न आए कि क्या करना है, तो तुम वह करना जो तुम्हें लगे कि मैं करता।"

बर्फीली दिसम्बर की हवा ने शाहबलूत की टहनियों को हिलाया और नाशपाती के पेड़ की पत्तियाँ उड़ा दीं। लूई के दादा-दादी जब फ्रांस से अमरीका आए थे वे इस पेड़ को अपने साथ लाए थे। उधर डेट्रॉइट नदी में भाप के जहाज़ और दो मस्तूलों वाले शूनर जहाज सर्दियों से होड़ लगगाते समुद्र की ओर बढ़ रहे थे। अचानक बादाम की झाड़ियों में सरसराहट सुनाई दी।

लूई ने सोचा, *हिरण या लोमड़ी।*

एक आवाज़ फुसफुसाई, "क्या तुम दोस्त हो?"

लूई इस कदर चौंक गया कि नाव ही गिर गई। उन शब्दों का एक ही मतलब हो सकता था, भगोड़े गुलाम।

उसने जवाब उन शब्दों में दिया जो उसके पिता ने बहुत पहले सिखाए थे।

"आप तलाश क्या रहे हैं?"

"आज़ादी।"

"क्या आप में आस्था है?"

"मेरे मन में उम्मीद है।"

तार-तार हुए शॉल में लिपटी एक काली स्त्री झाड़ियों की ओट से निकली। एक छोटी-सी लड़की उससे चिपटी थी। उनसे कुछ ही दूर लूई की उम्र का लड़का था, 12 या 13 साल का।

ख़ुदा तुम पर रहमत करे," स्त्री ने कहा। "मैं सारा हूँ, यह मेरी लड़की लूसी है और मेरा लड़का है टायलर। डेट्रॉइट के बैप्टिस्ट गिरजे में उन्होंने कहा था कि तुम्हारे डैडी हमारी मदद करेंगे।

कैन्टकी के गुलामों को धर-पकड़ने वाले ख़ूनी कुत्तों की तरह हमारे पीछे पड़े लगे हुए हैं। हमें फ़ौरन इस नदी के पार कनाडा जाना है, जहाँ गुलाम हमेशा के लिए आज़ाद हैं।"
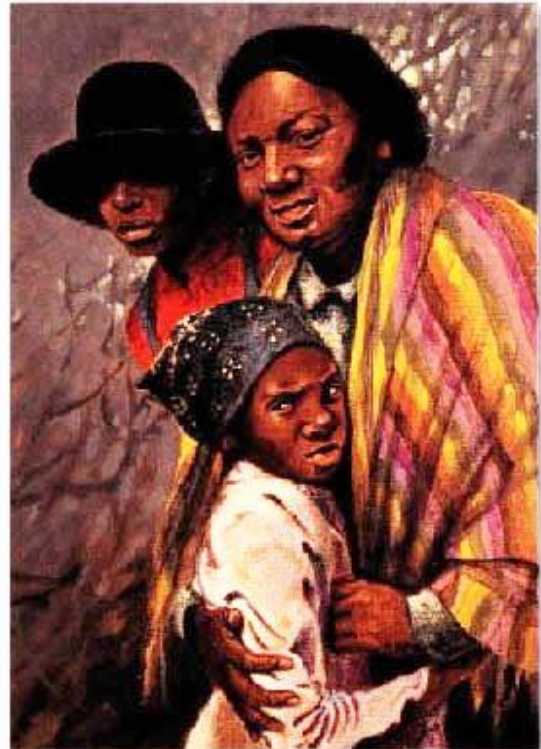
लूई जानता था कि ऐसी रात में नदी पार करने की बात से उसकी माँ परेशान होंगी। उसकी माँ ने तो पिता से भी कहा था कि वे ग़ुलामों को नदी पार पहुँचाना बन्द कर दें। उन्होंने ख़बरदार किया था, ''भगोड़े ग़ुलामों के नए कानून का मतलब है, जो उनकी मदद करेगा उसे कैद कर लिया जाएगा।''

पर पिता ने बार-बार यह जोखिम उठाया था, यह कह, ''मैं किसीको ग़ुलामी में वापस कैसे धकेल सकता हूँ।''

''मेरे पिता यहाँ नहीं हैं,'' लूई ने कहा। ''नदी की सतह जमने लगी है और हवा तेज़ है। रास्ता भी तीन घंटों का है।''

''पर पानी बेहद ठंडा है और हवा हमारे लिए तेज़ है, बच्चे,'' सारा ने कहा। ''हम पहले ही दो नदियाँ पार कर चुके हैं। डेट्रॉइट नदी आज़ादी की नदी है। यह हमारा आख़िरी मौका है। हमारे मालिक ने इन बच्चों के पिता को बेच दिया है। वह टायलर को भी बेचने वाला था, मानो वह एक घोड़ा या गाय हो। अगर तुम पार नहीं ले जाओगे तो हमें पानी में डूबना होगा।''

वह लड़का लूई को भौंहे चढ़ा ताक रहा था। ''शर्त लगे मैं नाव को नदी पार खे सकता हूँ।''

लड़के की चुनौती लूई को चुभ गई, ''ना, नहीं ले जा सकते, तुम्हें इसे पार करने के लिए इसकी धाराओं और उथले हिस्सों के बारे में पता होना होगा।''

स्त्री ठंड में काँप रही थी। छोटी लड़की बिना आवाज़ निकाले रो रही थी। लूई ने सोचा, *इसे यों रोना सीखना पड़ा होगा, ताकि कोई सुन न ले।*

लूई जानता था कि ऐसे में उसके पिता क्या करते। "आप यहीं रुकिए," उसने कहा।

खेत-घर की रसोई की गरमाहट लूई के गिर्द गरम कोट-सी लिपट गई। धधकते कोयलों पर केतली टंगी थी। उसने अपनी पसन्दीदा सफ़ेद मछली के शोरबे की गंध सूंघी। उस मछली को लूई ने ही पकड़ा था।

"खाना लगभग तैयार है लूई," माँ ने कहा।

"नाव का काम मैं कुछ ही समय में पूरा कर लूंगा। बस मुझे एक गुलूबन्द चाहिए था।"

उस छोटे से कमरे में जो लूई का सोने का कमरा था, लूई ने खिड़की खोली और अपने बिस्तर से उठा एक कम्बल के साथ एक स्वेटर और कोट खिड़की से बाहर फेंक दिया।

तब वह रसोई में लौटा ओर ज़ोर से गाता हुआ अपनी माँ को ले मेज़ के गिर्द नचाने लगा

*आलुएट प्यारी आलुएट,*
*पंखोंवाली चिरय्या,*
*तोड़ लूंगा एक पंख तेरा,*
*आलुएट....*

जब माँ का सिर घूम-घूम कर नाचने से चकराने लगा, वे कुर्सी से टिक हंसने लगीं। इस बीच लूई ने उनकी नज़र बचा उस चॉकलेट डबलरोटी का हिस्सा काट लिया, जिसे उन्होंने ठंडा होने के लिए रखा था।

दरवाज़े पर पहुँच वह मुड़ा और बोला, ''अगर मुझे देर हो जाए तो फ़िक्र न करना। आख़िर अंधेरा उजाले का उलटा ही तो होता है।''
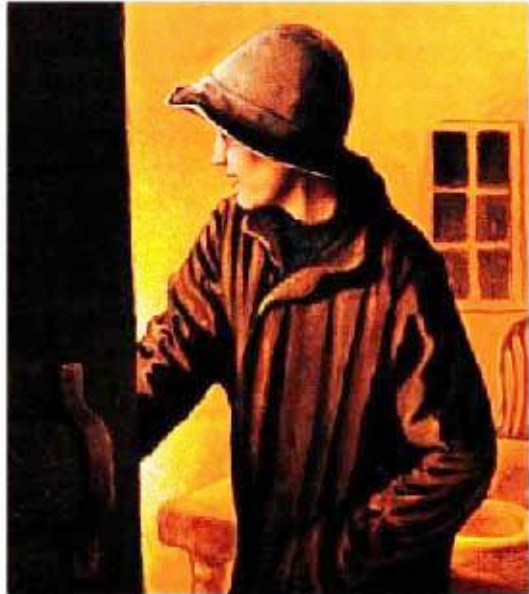
माँ हंसीं, ''यही तो तुम्हारे पिता हमेशा कहते हैं।''

लूई ने गरम कपड़े, कम्बल और चॉकलेट डबलरोटी सारा और उसके बच्चों को पकड़ाई। लगा कि वह लड़का कोट पहनेगा ही नहीं, पर तब उसने कोट पहन लिया।

''इस पर ध्यान न देना, वह बड़ा अड़ियल है,'' सारा ने कहा। ''मैं इससे कहती रहती हूँ कि अच्छे गोरे भी होते हैं। रास्ते में कितने ही गोरों ने हमारी मदद की है।''

बर्फ़ की पतली जमावट को तोड़, दोनों लड़कों ने मिल कर नाव पानी में उतारी। नाव को पकड़ा, ताकि सारा और लूसी उस पर सवार हो जाएं।

''क्या तुम सच में नाव खे सकते हो?'' लूई ने टायलर से पूछा।

''बिलकुल, मैं मालिक हर्मन को मड लेक में हर तरफ़ ले जा चुका हूँ।''

लूई और टायलर ने पतवारों को कुंडियों में फंसाया, और पानी की तेज़ धार ने मानो नाव को अपने हाथों में जकड़ लिया। वह नदी जो दिन में लूई को दोस्त लगा करती थी, रात को एक ख़तरनाक अजनबी में तब्दील हो चुकी थी।

''बहाव से लड़ने के लिए हमें नदी के ऊपरी तरफ़ बढ़ना होगा,'' लूई ने टायलर से कहा। बर्फ़ीली हवा उनके चेहरे को कचोटने लगी। खेत-घर का प्रकाश मद्धम होने लगा।

''आप लोग यहाँ तक पहुँचे कैसे?'' लूई ने सारा से पूछा।

''हमने ओहायो नदी पार की तब भूमिगत रेलरोड से स्टेशन दर स्टेशन बढ़ते गए।''

''हमने ध्रुव तारे का पीछा किया,'' लूसी ने जोड़ा।

''उन्होंने हमारे पीछे सूंघते-गुर्राते बड़े-बड़े कुत्ते छोड़े,'' टायलर ने कहा।

सारा ने जोड़ा, ''कई उदार लोगों ने हमें आसरा दिया, हम खाली पेट पहुँचे और उन्होंने हमें भरे पेट बिदा किया।''
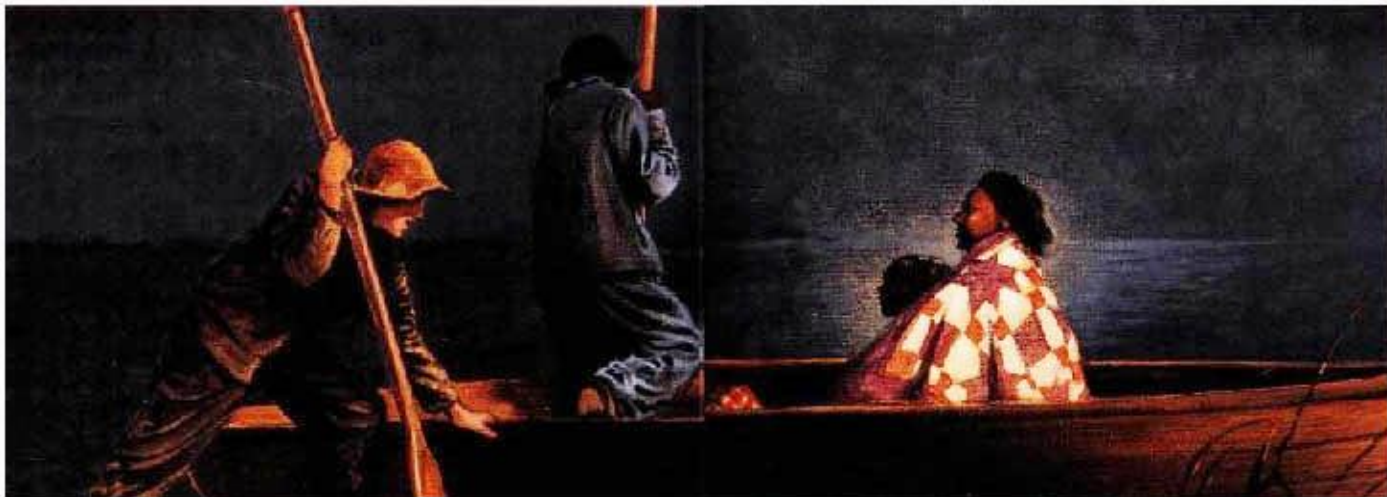
पतली बर्फ को काटते हुए चल रही नाव थरथरा रही थी। दिन के वक़्त गंगाचिल्लियाँ और दूसरे मछुआरे लूई का साथ दिया करते थे। पर सर्दियों की इस रात लूई को लग रहा था कि समूची दुनिया सिर्फ़ वे चार ही लोग हैं। लूई के दाँत किटकिटाने लगे थे और उंगलियाँ सुन्न हो चली थीं। सारा लूसी को हवा से बचाने खुद से चिपटाए बैठी थी।

खेत-घर की रोशनी तो कब की गायब हो चुकी थी, पर अब नदी की सतह पर एक और रोशनी चमकी। यह गश्ती नाव के लालटेनों की रोशनी थी। लूई को लगा कि उसने बर्फ़ की डली निगल ली हो। अगर वे पकड़े गए तो लूई तो जेल जाएगा ही, सारा और उसके बच्चे फिर से गुलामी में धकेल दिए जाएंगे।

"चप्पू चलाना बन्द कर दो," लूई ने फुसफुसा कर टायलर से कहा। "हमें बिलकुल शान्त रहना होगा।"

जैसे ही उन्होंने नाव को खेना बन्द किया, नाव कनाडा से उल्टी दिशा में खिसकने लगी। गश्ती नाव पास से गुज़री और उस पर बैठे लोगों की आवाज़ें पानी पर तैरती उन तक पहुँचीं। गश्ती नाव जो पानी पीछे धकेल रही थी वह उनकी नाव से टकराया। पर नाव की लालटेनों की रोशनी उन्हें पकड़ न पाई।

जब गश्ती नाव की आवाज़ें सुनाई देना बन्द हो गईं, लड़कों ने फिर से चप्पू चलाए। उनकी बाज़ुएं इस दौरान खोई हुई दूरी को तय करने की कोशिश में दुखने लगीं।

टायलर उतना ही फ़िक्रमन्द था जितना लूई। चुप्पी तोड़ने के लिए उसने पूछा, ‘‘तो इस नदी में तुम कौनसी मछलियाँ पकड़ते हो?’’

‘‘सफ़ेद मछली, हिल्सा, मीठे पानी की पर्च और स्टर्जन। मेरे पापा ने एक बार एक स्टर्जन पकड़ी थी जो 80 पाउंड की थी!’’ लूई ने कहा।

"वह मछली बड़ी होती है, उसे पकड़ने के लिए खूब ताकतवर होना पड़ता है। और कैटफिश पकड़नी हो तो चतुर भी होना पड़ता है। तब करना यह पड़ता है कि आप एक वज़नदार कांटा डालें और तल के नीचे छिपी इन मछलियों को उसमें फंसने दें।"

हवा उनके विपरीत थी और बर्फ़ की परत मोटी होने लगी थी। वे जितना आगे बढ़ रहे थे, लगता था कि उतने ही फीट पीछे धकेले जा रहे थे। लूई को इतनी ठंड कभी महसूस ही नहीं हुई थी।

काश वह पापा से पूछ सकता कि उसने सबकी जान जोख़िम में डाल ठीक किया भी था या नहीं।

सारा ने गाना शुरू किया और उसके बच्चे उसका साथ देने लगे।

*या ख़ुदा, या मेरे ख़ुदा, बचा मुझे डूबने से*
*बताती हूँ मैं मेरी मंशा है क्या*
*बचा मुझे नीचे धंसने से*
*मैं उठती कभी ऊपर, कभी जाती नीचे*
*बचा मुझे डूबने से*
*होती कभी मैं धरती पर*
*बचा मुझे नीचे धंसने से*
*देखती मैं ऊपर, दिखता मुझे क्या?*
*दिखते हैं फरिश्ते मुझे बुलाते हुए*
*बचा मुझे नीचे डूबने से ...*

मिनट भर बाद लूई भी उनके साथ गाने लगा। हवा ने उनके शब्दों को उन पर उछाला और तब वे हवा के साथ-साथ उनके पीछे बह चले।

सबने एक साथ ही सामने रोशनी देखी।

"क्या एक और गश्ती नाव है?" टायलर फुसफुसाया।

पर प्रकाश स्थिर था।

"वह तो कनाडा है!" लूई चीखा।

लूई और टायलर ने पतवारें उठा लीं। वे पानी में कूदे और नाव को किनारे खींच लाए।

लूई ने पास के खेत-घर के किवाड़ खटखटाए। उसने साँस रोक रखी थी, क्या वे लोग इस परिवार को पनाह देंगे?

चौंके हुए एक पुरुष और एक महिला ने दरवाज़ा खोला, और सबको जल्दी से घर अन्दर घुसाया। जब सब लोग कुछ देर में गरमा गए, उन्होंने खाना खिलाया। उन्होंने लूई से कहा कि वह रात में न लौटे, वहीं रुक जाए।

''आज रात तुम नहीं लौट सकते,'' उस पुरुष ने कहा।

''मुझे लौटना ही होगा, ममा को पता लग चुका होगा कि नाव ग़ायब है। अगर मैं न लौटा तो वह सोचेगी कि मैं डूब गया हूँ।''

सारा ने अपनी बाँहें लूई के गिर्द डालीं। लूसी उसकी टाँगों से लिपट गई। दोनों लड़कों ने हाथ मिलाए। ''मैं गर्मियों में लौटूँगा और हम स्टर्जन मछली पकड़ेंगे,'' लूई ने वादा किया।

तब लूई उन्हें उनकी नई पाई आज़ादी के पास छोड़, लौट गया।
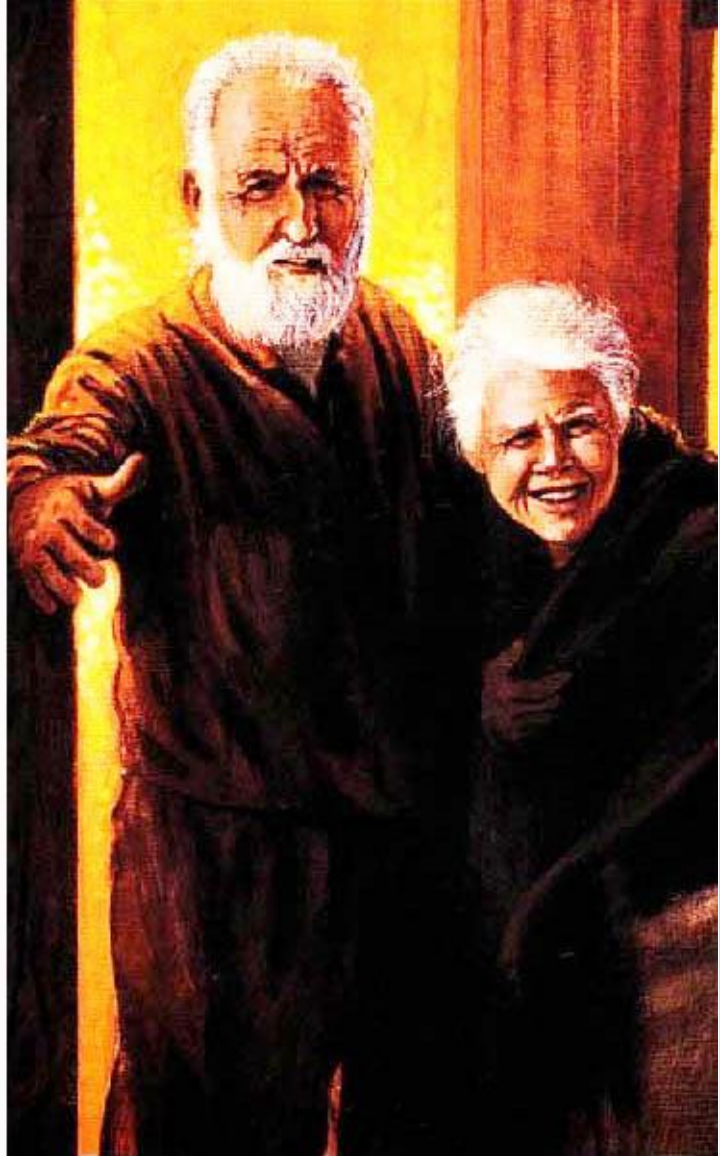
ठंडी हवा उसके चेहरे को डंक सी चुभ रही थी। लूई को बार-बार पतवार से बर्फ़ तोड़नी पड़ रही थी। उसके हाथ इतने ठिर चुके थे कि वह पतवार को ठीक से पकड़ ही नहीं पा रहा था। पर नाव अब हल्की थी, उसे खेना पहले से आसान था। और फिर जब आप अकेले हो तो अपना डर जताना भी आसान होता है। काश टायलर साथ होता, उसने सोचा।

खुद को अकेलापन महसूस न होने देने के वास्ते लूई ने गाना शुरू कियाः *मुझे नीचे डूबने से बचा।* उसे लगा कि सारा और उसके बच्चे भी गाने में उसका साथ दे रहे हैं।

दूर तट पर दिखती रोशनी ने अंधेरे को चीरा। इस बार हवा ने उसका नाम उस तक पहुँचाया। उसने पतवार पानी में नीचे तक डुबा बर्फ़ हटाई।

उसकी माँ तट पर उसका इन्तज़ार कर रही थी। उसने लूई को बाँहों में समेट लिया।

लूई ने माँ को सारा, लूसी और टायलर के बारे में बताया।

''जब पापा लौटेंगे,'' लूई बोला, ''मैं उनसे कहूँगा, 'डैडी मैंने वही किया जो मुझे लगा कि आप करते!''

## लेखिका के कलम से

## ग्लोरिया व्हेलन

अंदाज़ यह लगाया जाता है कि तकरीबन 40,000 गुलामों ने भूमिगत रेलरोड़ से सफ़र किया था। उनमें से कई गुलामों का आज़ादी का पथ उन्हें डेट्रॉइट और तब डेट्रॉइट नदी के पार कनाडा ले गया था।

इन जोखिम भरी यात्राओं की स्मृति में डेट्रॉइट के रिवर फ्रंट प्रोमेनेड के हार्ट प्लाज़ा में 'गेटवे टू फ्रीडम' नामक स्मारक बनाया गया है। इस 12 फुट के कांसे से बने स्मारक में आठ आकृतियों को डेट्राइट नदी के उस पार कनाडा के विन्डसर, ऑन्टोरियो को ताकते दर्शाया गया है।

उधर कनाडा में विन्डसर सिविक एसप्लनेड में 22 फुट लम्बा 'टावर ऑफ फ्रीडम' स्मारक है, जिसमें कांसे बनी 'फ्लेम ऑफ फ्रीडम' भूमिगत रेलरोड में कनाडा की गर्वीली हिस्सेदारी का जश्न मनाती है।
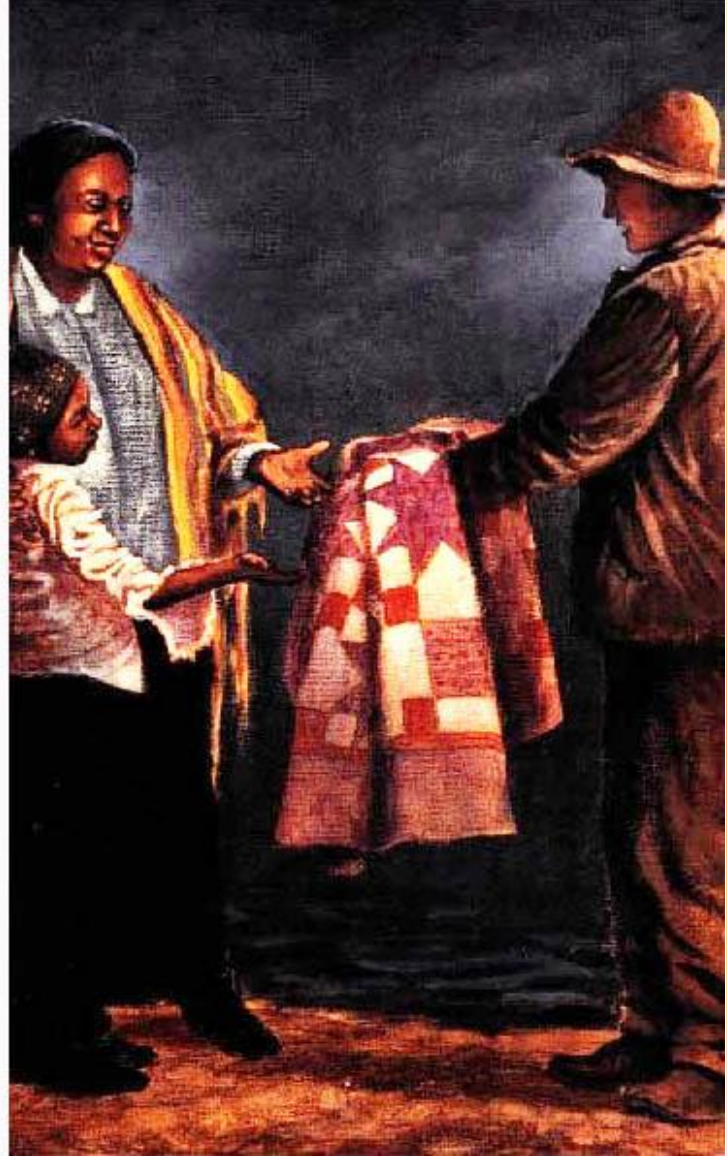
# वॉशिंगटन का बस सफ़र

## - 1963 का आजादी जुलूस

लेखन: ग्वैनेथ स्वेन

चित्र: डेविड गाइस्टर

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मुझे अच्छे से पता है कि वे मुझे वॉशिंगटन जाने वाली बस में क्यों बैठा रहे हैं। इसलिए कि मैं फिर से मुसीबत में हूँ।

"मुसीबत वह भी मोटे अक्षरों में," ममा हमेशा कहती हैं। अधिकतर यह कहते समय उनकी आँखों में मुस्कान होती है। पर कई बार, जैसे जब मैं गलती से जाली का दरवाज़ा धड़ाम से पटक अपने जुड़वाँ भाइयों को जगा देती हूँ, वह मुस्कान मुझे ढूंढ़े नहीं मिलती।

डैडी कतई नहीं चाहते कि मैं उनके साथ वॉशिंगटन जाऊं, पर लग रहा है कि इसके बावजूद मुझे जाना ही होगा।

"ढ़ेरों लोग डॉ. किंग को सुनने जा रहे हैं," डैडी ने एक रात ममा से तब कहा था, जब उन्होंने सोचा कि मैं सो चुकी हूँ। "मुझे जेनी को साथ ले जाने का ख़याल ठीक नहीं लग रहा, वह बड़ी तुनकमिज़ाज है।"

आपको पता है कि इसका क्या मतलब है? मुझे लगता है इसका मतलब है कि मैं आग उगलती हूँ। यह डैडी का इस बात को कहने का तरीका है कि मैं एक मुसीबत ही हूँ।

“हनी,” ममा ने डैडी से कहा, “वह लड़की इतनी बड़ी मुसीबत है कि मैं उसे अकेले संभाल नहीं सकती और फिर जुड़वों के दाँत भी तो निकल रहे हैं।”

सो, मैं वॉशिंगटन जा रही हूँ। घर से सैंकड़ों मील दूर। मुझे यह तो साफ़ पता है कि मैं क्यों जा रही हूँ, पर यह समझ नहीं आया है कि डैडी क्यों जा रहे हैं।

इन्डियानापोलिस में हमारे इलाके में, कलर्ड यानी काले लोग नहीं हैं। मैंने उन्हें सिर्फ़ टीवी पर देखा है। पर टीवी पर दिखाए जाने वाले काले ज़्यादातर दक्षिण में रहते हैं। उन पर आग बुझाने वाले पाइपों से पानी फेंका जाता है और पुलिस के कुत्ते उन्हें दबोचते दिखाए जाते हैं। पर डैडी कई काले लोगों को काम से जानते हैं।

लगता है डैडी डॉ. मार्टिन लूथर किंग का भाषण सुनने वॉशिंगटन जा रहे हैं। क्योंकि उन्हें लगता है कि हम सबको मिलजुल कर शान्ति से काम करना चाहिए। पर डैडी मुझे सिर्फ़ इतना कहते हैं, "हम इतिहास देखेंगे जेनी। इतिहास!"

मैं स्कूल में इतिहास पढ़ती हूँ, विश्वास करें वह कतई दिलचस्प नहीं है। और इन्डियानापोलिस छोड़ना भी दिलचस्प नहीं है।

मंगलवार को, शहर के वॉकर थियेटर के पास कुछ पुरानी बसें हमारे लिए खड़ीं थीं। उन पर नाम लिखे हुए थे - क्रिस्पस एटक्स स्कूल और रोलिन्स ग्रोव एएमआई चर्च। उनमें सवार होने वाले काले लोग
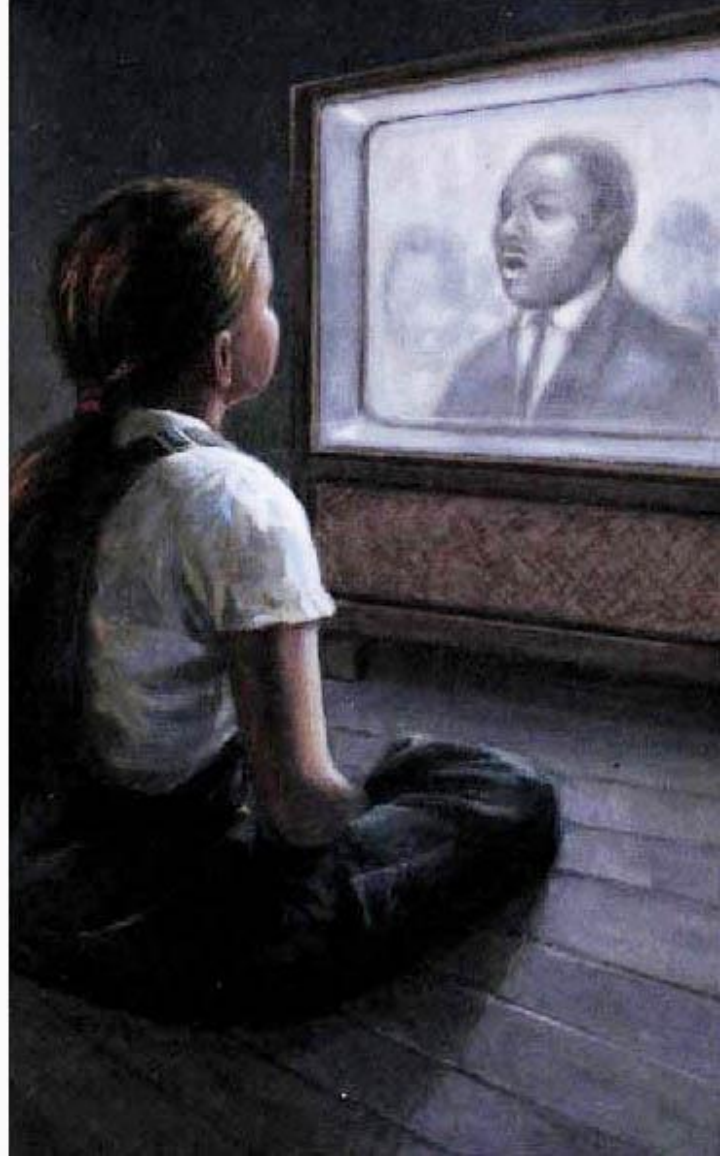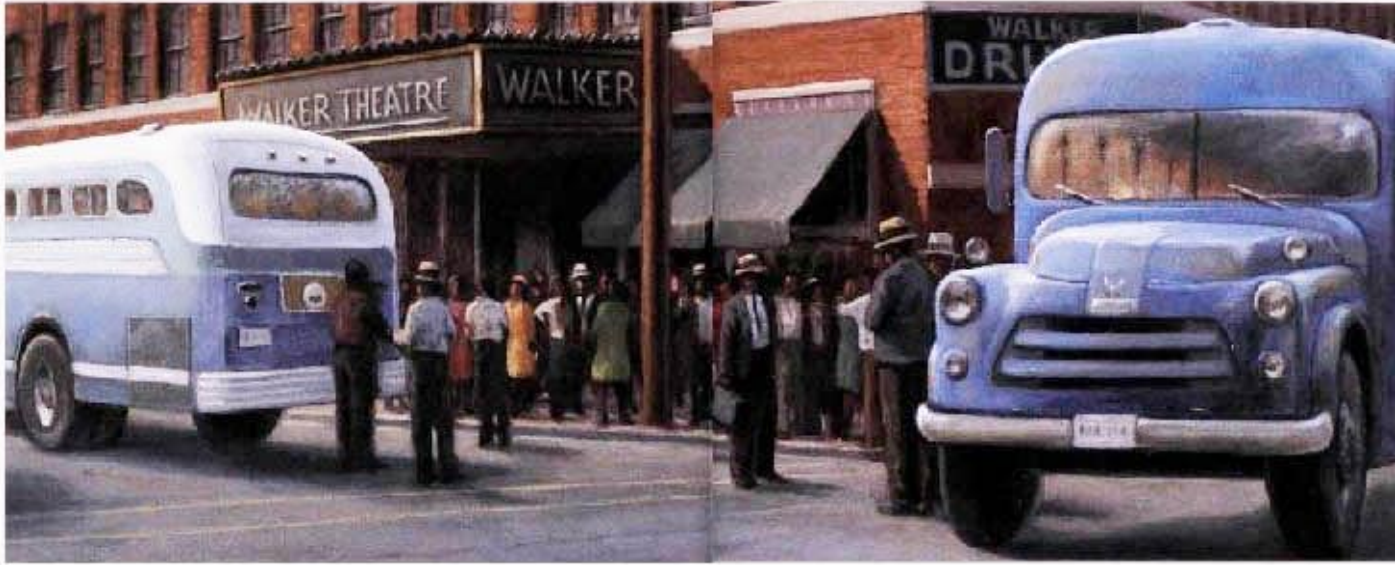
चमचमाते नए कपड़े पहने हुए थे मानो स्कूल का पहला दिन हो या ईस्टर इतवार। मुझे लगा कि मैं फिर से मुसीबत में फंसने वाली हूँ, क्योंकि मैं अपना पसन्दीदा पुराना ओवरऑल पहने हुए थी।। पर डैडी के रंगाई टीम के पॉल टायलर मुझे देख मुस्कुराए।

''मिल कर अच्छा लगा,'' उनकी पत्नी ने कहा। वे मिसेज़ कैनेडी जैसा टोप पहने थीं और उससे मैच करता सूट भी। ''तुम्हारे ओवरऑल बड़े आरामदेह लग रहे हैं,''

वे आँख मार कर बोलीं। वे सही कह रही थीं।

वहाँ लागों का मिश्रण था, बूढ़े थे और जवान भी। पादरी थे और किसान भी। मैं, डैडी और सिर्फ़ कुछ और गोरे, ढ़ेरों कालों के साथ थे। मैंने इतने सारे काले लोगों को एक साथ, एक जगह देखा ही नहीं था।

जब बस में चढ़ने का समय आया मुझे खुशी हुई।

गरमी के बावजूद मैं डैडी से चिपक कर बैठी।

हम सब अपने साथ खाना लेते आए थे। पर रात होते-होते सब फिर से भूखे थे। हम एक, दो, तीन बार रुके। पर हर बार पॉल टायलर और बस चालक रेस्त्रां में अन्दर घुसे और सिर हिलाते लौटे।

"मिश्रित समूह के लिए कोई सेवाएं नहीं हैं," पॉल ने साफ़ किया।

"हम अन्दर क्यों नहीं जा सकते?" मैंने डैडी से फुसफुसा कर कहा। "आप और मैं तो मिश्रित नहीं हैं।"

"जब कोई दूसरा खा नहीं सकता क्या तुम अकेले खाना चाहोगी?" उन्होंने पूछा।

सच तो यह था कि मैं इतनी भूखी थी कि कहीं भी, कुछ भी खा सकती थी। पर शायद डैडी सही कह रहे थे। सबके साथ एकजुट बने रहना बेहतर था। पर मैं कालों को देख रही थी - उनका आचरण कतई ऐसा न था कि वे कोई मुसीबत या हंगामा खड़ा करें। और मुसीबत के बारे में मैं बहुत कुछ जानती थी।

भूख से मन भटकाने के लिए पॉल टायलर ने गाना शुरु कर दिया। लगा कि गीत के शब्द सब जानते थे, पर मैं अटकती-लड़खड़ाती रहीः

*अपनी नन्ही सी इस लौ को चमकने दूंगा मैं,*

*अपने छोटे से इस प्रकाश को चमकने दूंगा मैं ...*

हम खेतों, शहरों, नदियों और पहाड़ों को पार करते बढ़ते जा रहे थे। पहियों की आवाज़ ने मुझको तब तक सुला दिया जब तक हम एक झटके से न रुके। हम एक गैस स्टेशन पर थे। डैडी की घड़ी ने बताया कि रात के लगभग बारह बज चुके थे।

मिसेज़ टायलर आगे बस चालक से कुछ पूछने गईं। मुझे सिर्फ़ चालक का जवाब सुनाई दिया, ''नहीं मैम,'' उसने कहा, ''मैं आपको यहाँ उतरने नहीं दे सकता।''

उन्होंने पेशाबघर के ऊपर लगी तख्ती पढ़ी। उस पर लिखा था, ''कालों को प्रवेश नहीं''। वे चिढ़ कर बोलीं, ''मैं जा रही हूँ।''

उनकी आवाज़ ने मुझे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। अचानक मुझे भी पेशाब करनी थी।

''सर,'' मैं चालक से बोली, ''मुझे जाना है।''

''तुम मुसीबत में फंस सकती हो मोहतरमा,'' चालक ने चेतावनी दी।

''मुझे जाना है,'' मैंने दोहराया।

मिसेज़ टायलर और मैं हाथ में हाथ डाले गैस स्टेशन पर गए। वहाँ एक दुबला-पतला लड़का काउन्टर के पीछे जगे रहने की कोशिश करता बैठा था। ''नौजवान,'' मिसेज़ टायलर ने कहा, ''हमें महिलाओं के कक्ष की चाभी चाहिए।''

उनकी दमदार आवाज़ ने लड़के को पूरी तरह जगा दिया। उसने पहले उन्हें तब मुझे देखा।

"मैं ... मैं आपको वहाँ घुसने नहीं दे सकता," उसने मिसेज़ टायलर को कहा। मिसेज़ टायलर का हाथ मेरे हाथ में अकड़ गया।

"हाँ, दे सकते हो," मैंने कहा।

उन दोनों ने मुझे चौंक कर देखा।

"बेशक," मैं बोलती गई, "मेरी ममा और डैडी हमेशा कहते हैं कि हम हमेशा सही काम करना या ना करना चुन सकते हैं।" मैंने यह नहीं कहा कि यह वे हमेशा मुझसे तब कहते थे जब मैं किसी लफड़े में फंस जाती थी।

लड़के ने सकपका कर पलकें झपकाईं।

मैं ऐसे बोलती गई माने किसी दोस्त से बात कर रही होऊं, "ममा कहती हैं कि मैं कई ग़लत चुनाव करती हूँ, पर मुझे लगता है कि इस वक़्त हमें अन्दर जाने देना सही चुनाव होगा।"

लड़के के गाल लाल हो गए। वह खाँसा। तब दूसरी ओर देखते हुए उसने चाभी हमारी ओर सरका दी, मानो गलती से सामने रख दी हो।

पेशाब घर में एक मशीन पर एक लम्बा सा तौलिया लगा हुआ था। उसे घुमाने को मैं जितना ऊँचा कूद सकती थी कूदी, पर मेरा कद छोटा था। मिसेज़ टायलर ने अपने बाल ठीक करते हुए मुझे देखा।

जब हम चाभी लौटाने गए हमारे शुक्रिया साथ-साथ निकले। पर लड़के ने व्यस्त होने का नाटक किया। उसके पास हमें कहने के लिए "आपका स्वागत है" भी नहीं था।

जैसे ही बस सड़क पर आगे बढ़ी, मिस्टर टायलर ने गाना शुरू कियाः

*चलो जुड़ो बच्चों! बच्चों!*

*चलो जुड़ो बच्चों! बच्चों!*

*चलो जुड़ो बच्चों! बच्चों!*

*लड़ें हम इन्सानों के हकों के वास्ते!*

इस बार शब्द मुझे साफ़-साफ़ समझ आए और मैंने साथ गाया।

जब आखिरकार हमारी बस एक बड़े मैदान आकर खड़ी हुई, उजाला हो चला था। मैंने अपनी ज़िन्दगी में इतनी बसें देखी न थीं। माहौल ऐसा था मानो कोई बास्केटबॉल प्रतियोगिता हो रही हो।

''सुप्रभात,'' मिसेज़ टायलर ने बस से उतरते वक़्त हमसे कहा।

''मौसम तो अच्छा है,'' डैडी ने किसी खास को संबोधित न करते हुए यों ही कहा।

हममें से कोई ऐसा नहीं लग रहा था कि हम बस में पूरा एक दिन और एक रात बिता चुके हों। हम ऐसे दिख रहे थे कि हम ठीक उस दिन सवेरे जागे हों जिसका सपना हम देखते आए हों।

बाद में जब डॉ. किंग बोल रहे थे हम लोग एक समूह में खड़े थे। हम मंच से मीलों दूर थे, पर क्या आप विश्वास करेंगे? मुझे लगा कि वे सीधे मुझे देख रहे हों।

डॉ. किंग का भाषण अच्छा था। वे जैसे बोल रहे थे वह मुझे संगीत-सा लगा। पर मैं सोचने लगीः वे मुझे अपने सपने के बारे में क्यों बता रहे हैं? मेरा उससे भला क्या लेना-देना है?

तब मुझे अपने कंधे पर एक कोमल हाथ का स्पर्श महसूस हुआ। मिसेज़ टायलर ने अपने चेहरे पर बहते आँसुओं के बीच मुझे देखा। और मैं समझ गई कि वह सपना सिर्फ़ डॉ. किंग या मिसेज़ टायलर और उनके पति का नहीं था, बल्की मेरा, मेरे डैडी का, और शायद गैस स्टेशन वाले उस लड़के का भी था।

# लेखिका की कलम से

## ग्वैनेथ स्वेन

28 अगस्त 1963 के दिन पौ फटते ही बसें पहुँचने लगी थीं। वे लम्बी-लम्बी कतारों में बम्पर से बम्पर छूतीं, हवा आने के लिए खुली खिड़कियों के साथ खड़ी थीं। दिन गर्म और उमस भरा होने वाला था। पर उन बसों से उतरते हज़ारों लोगों को इसकी खास फ़िक्र नहीं थी। हालांकि वे पिछली रात ज़्यादा सोए नहीं थे उन्हें इसकी भी परवाह नहीं थी। जैसा मेरे पिता को याद है, पूरा माहौल एक उत्सव का सा था, और "शान्ति का अहसास पसरा था।" मेरे पिता और दादा, दोनों गोरे पुरुष, डॉ. किंग और अन्य लोगों को सुनने मध्य इन्डियाना से बस में बैठ कर वॉशिंगटन पहुँचे थे। मैं उस समय सिर्फ़ दो साल की थी। पर मैं बहुत समय से सोचती रही हूँ कि अगर मैं भी वॉशिंगटन के उस जुलूस में छोटी लड़की के रूप में शरीक हुई होती तो मुझे कैसा लगता।

इतिहास की किताबों में वॉशिंगटन जुलूस को सबसे ज़्यादा डॉ. मार्टिन लूथर किंग, जूनियर के विख्यात भाषण, "मेरा एक सपना है ..." के लिए याद किया जाता है। पर जो लोग बसों से वहाँ पहुँचे थे, वॉशिंगटन के लिंकन मेमोरियल पर उन 200,000 लोगों की भीड़ ने, डॉ. किंग के भाषण के पहले ही इतिहास रच डाला था। जिस पल वे इन्डियानापोलिस, मैम्फिस, शिकागो और अनेक अन्य शहरों से बस में चढ़े थे - काले और गोरे, ईसाई, मुसलमान और यहूदी - शान्ति से एक साथ जुड़ने का सपना हकीकत में बदलने लगा था। और उस सुबह वॉशिंगटन डी.सी. में वे लोग और उनका सपना अपने गन्तव्य पर पहुँच गया था।

कवियत्री व अनेक पुरस्कृत बाल पुस्तकों की रचयिता **ग्लोरिया व्हेलन** को किशोरों के लिए रचे उनके उपन्यास *होमलैस बर्ड* के लिए नैशनल बुक अवॉर्ड दिया गया था। उनकी रचनाओं में *यूकी एण्ड द वन थाउसैण्ड कैरियर्स* तथा *यटान्डाउ* शामिल हैं। मिज़ व्हेलन मिशिगन में लेक सेंट क्लेयर के पास रहती हैं।

**ग्वैनेथ स्वेन** को अपनी कथाओं में पारिवारिक कहानियाँ और इतिहास को बुनना पसन्द है। उनकी रचनाओं में *होप एण्ड टियर्स; एलिस आइलैण्ड वॉयसेस्; चिग एण्ड द सैकेंड स्प्रैड* तथा *आई वन्डर एज़ आई वॉन्डर* शामिल हैं। वे सेंट पॉलस्, मिनियापोलिस में रहती हैं।

**हाइसबर्ट फॉन फ्रैंकनहायज़न** ने स्लीपिंग बेयर प्रेस के लिए 20 से अधिक पुस्तकों को चित्रित किया है। उनके द्वारा चित्रित क़िताबों में *टी इज़ फॉर टायटैनिक; एल्फाबैट; मैकिनैक ब्रिजः द फाइव माइल पोयम,* तथा बैस्ट सैलर *द लैजेण्ड ऑफ द स्लीपिंग बेयर* शामिल हैं। वे बाथ, मिशिगन में रहते हैं।

**डेविड गाइस्टर** नाटक व अमरीकी इतिहास के मुरीद हैं, और वे कहानियाँ उनकी चित्रकला को प्रेरित करती हैं। उनकी क़िताबों में *बी इज़ फॉर बैटलक्राय; अ सिविल वॉर एल्फाबैट* तथा *सर्वाविंग द हिंडनबर्ग* शामिल हैं। वे मिनियापोलिस, मिनेसोटा में रहते हैं।

**मइक बैनी** के चित्र *टाइम; द न्यू यॉर्कर* व *स्पोर्टस् इलस्ट्रेटेड* पत्रिकाओं में छपे हैं। उन्हें सोसायटी ऑफ इलस्ट्रेटर्स ने तीन स्वर्ण पदकों और दो रजत पदकों से नवाज़ा है। वे ऑस्टिन, टेक्सास में रहते हैं।